

Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

——
संस्कृत की ही सारी भाषायें सन्तान

——
Document Information



Text title : Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

File name : sanskRRitakIhIsArIbhAShAyeMsantAna.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org




संस्कृत की ही सारी भाषायें सन्तान




संस्कृत-माता की ही सारी भाषायें सन्तान हैं
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी ज़ुवनदान हैं । ०
सिन्धी हिन्दी या आसामी उडुःिया या बङ्गाली हो,
गुजराती गुरुमुभी मराठी कश्मीरी गोरभाली हो,
दक्षिण की या तमिल तेलगू कन्नड या मलयाली हो,
अपभ्रंश या प्राकृत भाषा अर्द्धमागधी पाली हो,
संस्कृत से ही मिला सभी को गौरव आज मडान् है,
इससे ही यह सारी पातीं अब भी ज़ुवनदान हैं । १
संस्कृत से ही ये भाषायें अपना रूप सजाती हैं,
इसके आभरणों से ही ये निज सौन्दर्य बढ़ाती हैं,
अपनी अच्छी बात इसी की वाणी में कह पाती हैं,
इसके ही पङ्क्तियों पर चढ़कर दूर-दूर उडुः जाती हैं,
संस्कृत ही इन भाषाओं की शोभा-शक्ति-निधान हैं,
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी ज़ुवनदान हैं । २
आज राष्ट्रभाषा के पद पर आसीना जो हिन्दी है,
संस्कृत से ही उसे मिली यह राजतिलक की बिन्दी है,
इसका ही अब भी बल पाकर वह उन्नति कर सकती है,
तभी देश की आवश्यकतायें पूरी कर सकती है,
संस्कृत से ही आज मिला यह हिन्दी को वरदान है,
संस्कृत से ही यह सब पातीं अब भी ज़ुवनदान हैं । ३

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

——
Sanskrita Ki Hi Sari Bhashayem Santana

pdf was typeset on May 19, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

